हिन्दी कथा–साहित्य कल, आज और कल

शोध पत्र–हिन्दी

* डॉ प्रदीप कुमार मीना

आज की हिन्दी कहानियां सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक विसंगतियों और विद्रूपताओं पर अनेकानेक सटीक टिप्पणियां और दस्तावेज नजर आती हैं। इतिहास में काल और युग दर्ज होते हैं, किन्तु भावना और संवेदना नहीं होती, जबकि कथा–साहित्य अपने समय का दर्पण और एक यथार्थ अभिव्यक्ति होता है जिसमें हम उस समय की धड़कनों, समाज और देश की संवेदनाओं तथा गली–मुहल्लों और जन सामान्य के संघर्षों को विभिन्न मुद्राओं में देखते हैं। इस अर्थ में पूर्ववर्ती हिन्दी कहानी ने तो सार्थक भूमिका निभाई ही है, आज की कहानी भी उस परम्परा में अत्यन्त सार्थक भूमिका निभा रही है। कह पाना मुश्किल है कि कथा–साहित्य की रचना कब से हो रही है। रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों से लेकर जयशंकर प्रसाद की कामायनी सुमित्रानंदन पंत के लोकायतन, धर्मवीर भारती की काव्य कृतियों–अंधायुग और कनुप्रिया तक सभी मूलतः कथा–आधारित है। लेकिन संक्षेप में यह कहना असंगत न होगा कि सही अर्थों में हिन्दी कहानी की शुरूआत का श्रेय कथा–सम्राट मुंशी प्रेमचंद को जाता है, जिन्होंने गोदान जैसा सशक्त उपन्यास और 'पूत की रात', 'नमक का दरोगा', 'बड़े घर की बहू' तथा 'कफन' जैसी सशक्त कहानियां लिखीं।

मुंशी प्रेमचंद आजादी के पूर्व के कथाकार हैं। एक लम्बे समय तक उन पर गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव रहा। गांवों और किसानों की व्यथा को उन्होंने रेखांकित किया। 1936 के आस–पास जीवन की सांध्य वेला के निकट वह सोवियत समाजवादी क्रान्ति से प्रभावित हुए। अपने एक पत्र में उन्होंने लिखा था कि ''अब मैं बोल्शेविक हो गया हूं''। इसी दौर में उन्होंने भारतीय मजदूर वर्ग की वेदना को समेटते हुए गोदान की रचना की ''महाजनी सभ्यता'' जैसा लेख लिखा और भारतीय समाज की पतन गाथा के रूप में 'कफन' कहानी लिखी। इस कहानी में वह दिखाते हैं कि किस तरह शराब की हवस में माधो और घीसू नामक पिता–पुत्र बहू का कफन तक बेच खाते हैं। यह भारतीय समाज की पतनशीलता पर एक सशक्त टिप्पणी है। इसी दौर में जयशंकर प्रसाद भी कहानी, उपन्यास लिख रहे थे। 'आकाशदीप' उनकी अत्यन्त प्रसिद्ध कहानी है। किन्तु उनकी रचनाओं में कलावादी रूझान अधिक था, जबकि कालांतर में जो प्रगतिशील कथाधारा विकसित हुई, उसने प्रेमचंद की यथार्थवादी प्रगतिशील कथाधारा को ही आत्मसात किया। इसी समय चन्द्रधर शर्मा गुलेरी जैसे लेखक भी हुए। कहते हैं कि उन्होंने केवल तीन कहानियॉं लिखीं और अपनी एक कहानी 'उसने कहा था' के माध्यम से कथा–साहित्य में स्थान बना लिया। प्रेमचन्द के बाद हिन्दी में तीन कथाकारों का सर्वाधिक उल्लेख हुआ है। ये हैं– यशपाल, अज्ञेय और जैनेंद्र कुमार। यशपाल स्वयं स्वतन्त्रता आन्दोलन की सशस्त क्रान्ति से उभरे थे, अज्ञेय ने भी आजादी की लड़ाई में भाग लिया। जैनेंद्र कुमार गांधीवादी चिंतनधारा से अत्यन्त प्रभावित थे। यशपाल का नाम प्रेमचन्द की यथार्थवादी–प्रगतिशील धारा के प्रमुख लेखकों में लिया जाता है।

उन्होंने 'फूलों का कुर्ता', तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ, 'उत्तराधिकार'' आदि अनेक महत्वपूर्ण कहानियॉं लिखीं। भारत विभाजन की त्रासदी और उसके पश्चात् स्वतंत्र भारत में पैदा होती भ्रष्टाचार तथा राजनीतिक जोड़–तोड़ की प्रवश्तियों पर उनके दो खण्डों का उपन्यास झूठा सच एक अद्‌भुत कृति है जिसे मूर्धन्य आलोचक डॉ. नगेन्द्र ने भी ''महाकाव्य'' की संज्ञा दी थी और चन्द्रगुप्त विद्यालंकार ने कहा था कि इस एक अकेले उपन्यास से यशपाल उपन्यासकार के रूप में प्रेमचन्द से भी आगे निकल जाते हैं। उनके दो अन्य उपन्यास दिव्या और तेरी मेरी उसकी बात भी उल्लेखनीय कृतियॉं हैं अज्ञेय व्यक्तिवादी विचारधारा के कथाकार माने जाते हैं और उन्होंने अपनी कुछ कृतियों में मार्क्सवादी विचारधारा का पात्रों के माध्यम से विरोध किया है, विशेषतः उपन्यास शेखर एक जीवनी में। उनके दो अन्य उपन्यास नदी के द्वीप और अपने अपने अजनबी भी चर्चित रहे हैं। यद्यपि अज्ञेय में व्यक्तिवादी स्वर है किन्तु उनके जयदोल संग्रह की अनेक कहानियां सामाजिक संलग्नता की कथाकृतियां हैं। यों अज्ञेय कवि के रूप में अधिक चर्चित रहे हैं। जैनेंद्र ने स्त्री–पुरूष के संबंधों और मनोवैज्ञानिक विश्लेषण को अपनी कहानियों में प्राथमिकता दी। उनका उपन्यास त्यागपत्र हिन्दी कथा साहित्य की निधि है। इसी दौर में इलाचन्द्र जोशी ने मनोविश्लेषणात्मक कहानी–उपन्यास लिखे। इस दृष्टि से उनका उपन्यास पिंजड़े की उड़ान विशेष चर्चित रहा है। भगवतीचरण वर्मा ने कहानी में मनोरंजन को प्राथमिकता दी, जिसका प्रमाण 'मुगलों ने सल्तन बख्श दी', 'दो बांके' आदि उनकी कहानियां हैं, किन्तु उनका चिंतनपूर्ण उपन्यास चित्रलेखा जिसमें पाप और पुण्य धर्म, और अधर्म की व्याख्या की गई है, चर्चा के केन्द्र में रहा है। इसी भांति उपेन्द्रनाथ अश्क का गिरती दीवारें, वृंदावनलाल वर्मा का ऐतिहाकसिक उपन्यास मृगनयनी, चतुरसेन शास्त्री का ऐतिहासिक उपन्यास जय सोमनाथ, पांडेय बेचन शर्मा उग्र का उपन्यास

*व्याख्याता हिन्दी, राजकीय कन्या महाविद्यालय, सवाई माधोपुर

फागुन के दिन चार, अमृतलाल नागर के उपन्यास बूंद और समुन्द्र खंजन नयन आदि भी चर्चा के केन्द्र में रहे हैं। ये सभी प्रेमचन्द के बाद की पीढ़ी के प्रमुख लेखक थे, जिनमें रांगेय राघव का नाम भी उनके उपन्यास कब तक पुकारूं के कारण लिया जाना चाहिए। लेकिन यशपाल, अज्ञेय, जैनेन्द्र, भगवती चरण वर्मा और उपेन्द्रनाथ अश्क जहां उपन्यासकारों के साथ ही प्रमुख कथाकार भी थे, वहीं इलाचन्द जोशी, अमृतलाल नागर, वृंदावनलाल वर्मा, उग्र, चतुरसेन शास्त्री आदि अपने उपन्यासों के कारण अधिक चर्चित रहे। तत्पश्चात् की अगली पीढ़ी वह थी जिसने स्वतन्त्रता के तत्काल बाद कथा–साहित्य में अपनी अलग पहचान बनाई तथा 'कहानी' आन्दोलन को जन्म दिया। आजाद के बाद के दौर में सामाजिक–आर्थिक जीवन में एक बदलाव आना शुरू हुआ था तथा विभिन्न नगरों व कस्बों के लेखक लगभग एक सोच के साथ तथा नई भाषा व शैली की ईजाद करते हुए लिख रहे थे। सन् 1954 और 55 के आसपास ऐसी स्थायी महत्व की कहानियां उस समय की चर्चित पत्रिका कहानी के अंकों व विशेषांकों में प्रकाशित हुई। बाद में इनमें से अनेक लेखकों की कई उल्लेखनीय कथा–कृतियों नई कहानियां पत्रिका में छपी। कहाना न होगा कि इन दोनों 'पत्रिकाओं के संपादक पद पर एक लम्बे अरसे तक भैरव प्रसाद गुप्त आसीन रहे जिन्हें कहानी की गहरी समझ थी और नई कहानी–आन्दोलन के अनेक लेखकों को प्रतिष्ठित करने में उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

ये लेखक और इनकी प्रमुख कहानियां हैं। भीष्म साहनी की 'चीफ की दावत' और 'अमृतसर आ गया' 'कमलेश्वर की राजा निरबंसिया', 'नीली झील', 'दिल्ली में एक मौम' और 'जार्ज पंचम की नाक', निर्मल वर्मा की 'परिन्दे' और 'लंदन की एक रात', राजेन्द्र यादव की 'जहां लक्ष्मी कैद है', मोहन राकेश की 'मलबे का मालिक', अमरकान्त की 'डिप्टी कलक्टरी', कृष्णा सोबती की 'यारों के यार' और 'तिन पहाड़' शेखर जोशी की 'दाज्यू' 'बदबू' और 'कोसी की घटवार' मार्कंडेय की 'भूदान' आदि। इसी क्रम में लेखक फणीश्वर नाथ रेणु हैं जिन्हें उनके उपन्यास मैला आंचल के कारण एक आंचलिक लेखक के रूप में याद किया जाता है। 'तीसरी कसम', 'संवादिया' आदि उनकी चर्चित कहानियां है। शैलेश ने उत्तर प्रदेश के कूर्माचल को और 'पोस्टमैन' जैसी अप्रतिम कहानियां लिखी। चिट्टीरसैन उनका चर्चित आंचलिक उपन्यास है। उनके उपन्यासों व कहानियों में बंबई का नारकीय जीवन भी बड़े पैमाने पर देखने को मिलता है। बोरीवली से बोरीबंदर उपन्यास और 'एक कोप चाय : दो खारा बिस्कट' कहानी उनकी बंबई जीवन की सशक्त चर्चित कृतियां हैं। धर्मवीर भारती ने इसी दौर में कवि, कहानीकार, उपन्यासकार के रूप में अपनी अलग पहचान बनाई। रूमानियत को समेटे गुनाहों का देवता उनका अत्यन्त लोकप्रिय उपन्यास है तो सूरत का सातवॉं घोड़ा प्रयोगात्मक शैली के लिए याद किया जाएगा। 'गुल की बन्नो', 'सावित्री नंबर दो' 'बंद गली का आखिरी मकान' आदि उनकी स्मरणीय कहानियां हैं। शैलेश मटियानी और धर्मवीर भारती 'नई कहानी' आन्दोलन की देन नहीं है? इसी भांति शानी की भी कुछ अलग पहचान है, जिन्होंने काला जल शीर्षक उपन्यास के माध्यम से बस्तर के आदिवासी क्षेत्र की तस्वीर उभारी तथा 'कफन चाहिए' और अन्य कहानियां में निम्न मध्यवर्गीय मुस्लिम समाज को विषयवस्तु बनाया। कृष्णा सोबती के समानांतर इस दौर में दो अन्य सशक्त महिला कथाकार सामने आई। ये हैं – मन्नू भण्डारी और उषा प्रियवंदा। मन्नू जी का उपन्यास आपका बंटी तथा उषा जी का उपन्यास एक सड़क सत्तावन गलियां अत्यधिक चर्चित हरे।

किन्तु उषा की कहानी 'वापसी' और मन्नू भण्डारी की 'त्रिशंकु' सहित अनेक कहानियां चर्चा के केन्द्र में रही है। संभवतः यह दौर हिन्दी कहानी का स्वर्णिम दौर है। इस दौर में लगता है, मानों लेखकों का एक पूरा काफिला आगे बढ़ता चला आ रहा था। लेखक चाहे 'नई कहानी' के आन्दोलन से जुड़े थे अथवा नहीं, किन्तु सभी ने स्वातंत्र्योत्त्र भारत के नए उभरते समाज, अंचल विशेष से लेकर गांव, कस्बे तथा शहरी के जीवन और पारिवारिक संबंधों और कहीं–कहीं उनमें आती दरार को रेखांकित किया। यदि इस काल की समस्त कहानियों को इकट्ठा कर लिया जाए तो इनमें तत्कालीन भारत के मध्य वर्ग, निम्न मध्यवर्ग, अंचलों और गांवों में रहने वाले लोगों की तस्वीर उभरती नजर आती है। इन्हीं के बीच हरिशंकर परसाई जैसे लेखक 'भोलाराम का जीव'' तथा अपनी अन्य अनेक कहानियां तथा व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से अपने समय की विद्रूपताओं पर कटाक्ष करते दिखाई पड़ते हैं वह उस दौर के एकमात्र लेखक थे जिन्होंने सामाजिक विसंगतियों, व्यवस्था के अंतर्विरोधों तथा पूंजीवादी समाज पर तेज–तीखे प्रहार किए। बाद में शरद जोशी और श्रीलाल शुक्ल भी अत्यन्त समर्थ व्यंग्यकारों के रूप में उभरे। श्रीलाल शुक्ल का उपन्यास राग दरबारी इस दृष्टि से उल्लेखनीय है। व्यंग्य अनेक अन्य लेखकों ने भी लिखे, लेकिन जो तीव्रता हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचनाओं में देखने को मिलती है, वह अप्रतिम और अतुलनीय है। 'नई कहानी' आन्दोलन के दौर को भाषा की तेजस्विता और ताजगी, शैली और शिल्प की नवीन बुनावट, कथानकों में अत्यन्त नएपन के लिए भी स्मरण किया जाएगा। संक्षेप में यह कि आज भी यदि हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियां चुननी हों तो ये हमें सर्वाधिक संख्या में ही नहीं, बल्कि श्रेष्ठता की दृष्टि से भी 'नई कहानी' के हलचल भरे दौर से ही मिलती है। सन् 1962 के चीनी आक्रमण ने देश की स्थिति को काफी बदल दिया। अर्थव्यवस्था धीरे–धीरे चरमराने लगी। बेरोजगारों की कतारें बड़ी होती चली गई। औद्योगिकरण तथा व्यापक नगरीकरण ने नई समस्याओं को जन्म दिया। राजनीतिक स्तर पर 1967 तक आते–आते अस्थिरता का दौर आरम्भ हुआ और इसी के साथ राजनीति की व्यवस्था अधिकाधिक शोषणकारी बनती चली गई। एक आक्रोशमय युवा पीढ़ी सामने आई। इन परिस्थितियों ने हिन्दी कहानी के रूप–स्वरूप को भी बदलां 'नई कहानी' आन्दोलन के बाद हिन्दी कहानी में एक और आन्दोलन आया जिसने इन सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विसंगतियों को रेखांकित किया।

यह था 'सामांतर कहानी' आन्दोलन, जिसका केन्द्र कमलेश्वर के संपादन में सारिका पत्रिका थी। इस दौर में अनेक नए लेखक उभरकर सामने आए, जैसे मधुकर सिंह, कामतानाथ, हिमांशु जोशी, आशीष सिन्हा, इसमाइल, सुभाष पंत, श्रवण कुमार, प्रवण कुमार बंधोपाध्याय, आलम शाह खान, रमेश बतरा, से.रा. यात्री आदि। इसमाइल की 'दर्द का रिश्ता', प्रणव कुमार बंधोपाध्याय की 'बारूद की सृष्टिकथा' और 'असंबोधित देवदास', रमेश उपाध्याय की 'देवीसिंह कौन', प्रदीप पंत की 'आम आदमी का शव', आलम शाह खान की 'दर्द का रिश्ता', हिमांशु जोशी की 'मनुष्य चिन्ह', रमेश बतरा की 'दूसरी मौत', श्रवणकुमार की 'जहर' से.रा.यात्री की 'केवल पिता', सुभाष पंत की 'म्यान से निकली तलवार' आदि 'समांतर कहानी आन्दोलन' दौर की चर्चित रचनाएं हैं ज्ञानरंजन गिरिराज किशोर, चित्रा मुद्‌गल, काशीनाथ सिंह, दूधनाथ सिंह आदि लेखक यद्यपि 'समांतर आन्दोलन' से नहीं जुड़े थे, किन्तु इन लेखकों ने अनेक सार्थक रचनाएं लिखीं। जैसे कि ज्ञानरंजन की ''फेंस के इधर और उधर', मृदुला गर्ग की 'डैफोडिल जल रहे हैं', रमाकान्त की 'करर्लो हब्शी का संदूक', चित्रा मुद्‌गल की 'जिनावर', स्वयंप्रकाश की 'एक खूबसूरत घर' और 'पार्टीशन', मिथलेश्वर की 'बाबूजी', काशीनाथ सिंह की 'सदी का सबसे बड़ा आदमी', दूधनाथ सिंह की 'रीछ' आदि कहानियां ये लगभग सभी कहानियां बड़े सार्थक ढंग से अपने समय को रेखांकित करती हैं और साथ ही साथ अपने समय की विसंगतियों को स्पष्ट करती हैं।

'समांतर कथा आन्दोलन' के समानांतर हिन्दी में 'सचेतन' और 'अकहानी' आन्दोलनों का भी उदय हुआ। 'सचेतन' कहानी आन्दोलन के मुख्यतः महीपसिंह, मनहर चौहान आदि जुड़े थे, लेकिन इनकी कहानियों में वह तल्खी और अपने समय के प्रति वह तीव्र संलग्नता नहीं थी, जिसकी अपेक्षा की जाती थी। दूसरी और अकहानी आन्दोलन मूलतः निषेधात्मक था, जिसके अन्तर्गत समाज के प्रति एक वेयक्तिक नकार का भाव निहित था। वस्तुतः अमरीका में जिस 'बीटनिक' कविता और बंगाल में जिस श्मशानी पीढ़ी के साहित्य ने सिर उठाया था और जो मनुष्य के वैयक्तिक जीवन की कुंठा पर आधारित था, उसी का प्रतिफलन' अकहानी में हुआ था जिसके प्रमुख लेखक जगदीश चतुर्वेदी, सतीश जमाली आदि थे। काफी हद तक आन्दोलन के स्तर पर इनका नेतृत्व राजकमल चौधरी ने किया था। किन्तु अपने नाकारात्मक सोच और निषेधामक चिंतन के कारण यह कथा–आन्दोलन आगे नहीं बढ़ सका। लेकिन चीनी आक्रमण और राजनीतिक अस्थिरता के दौर ने समाज में, विशेषतः वैयक्तिक स्तर पर जिस तरह की हताशा और नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित किया, उससे ही इस कथा–आन्दोलन का लेखन उभरा, जिसकी अपनी अलग ऐतिहासिक महत्ता है। आठवें और नवें दशक तक हिन्दी कहानी में आन्दोलनों का दौर लगभग समाप्त हो गया, लेकिन कथा–यात्रा चलती रही। अनेक पुराने लेखकों, यथा कमलेश्वर भीष्म साहनी, निर्मल वर्मा आदि का लिखना जारी रहां उनके बाद की पीढ़ी के मधुकर सिंह, हिमांशु जोशी, प्रदीप पंत, मृदुला गर्ग, चित्रा मुद्‌गल, गिरिराज किशोर, रमेश उपाध्याय, से.रा.यात्री आदि लगातार लिखते रहे। इन्हीं के साथ एक नई पीढ़ी भी सामने आई जिसमें असगर वजाहत, स्वयं प्रकाश, नमिता सिंह, धीरेन्द्र अस्थाना, उदय प्रकाश, महेश दर्पण, वीरेन्द्र जैन, राजकुमार गौतम, महेश कटारे, मंजुल भगत, बलराम, संजय, सृंजय, शिवमूर्ति, पंकज बिष्ट आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

पंकज बिष्ट की कहानी 'टुंड्रा प्रदेश' महेश दर्पण की वजूद खोते हुए, उदय प्रकार की 'दरियाई घोड़ा' और 'तिरिछ', अब्दुल बिस्मिल्लाह की 'अलिया धोबी और पाव भर गोश्त', नमिता सिंह की 'नीलगाय की आंखें', धीरेन्द्र अस्थाना की 'लोग हाशिये पर', बलराम की 'शिक्षाकाल', महेश कटारे की 'इतिहास कथा–अथकथा', वीरेन्द्र जैन की 'मैं वही हूं'', शिवमूर्ति की 'तिरिया चरित्तर' संजीव की 'तीस साल का सफरनामा', सृंजय की 'कामरेड का कोट', अरूण प्रकाश की 'भैया एक्सप्रैस' आदि महत्वपूर्ण कहानियां हैं। हिन्दी में आज एक साथ कई पीढ़ियों के लेखक सक्रिय हैं। एक छोर पर भीष्म साहनी, कमलेश्वर, कृष्णबलदेव वैद, निर्मल वर्मा, कृष्णा सोबती आदि 'नई कहानी' दौर के लेखक हैं, दूसरे छोर पर हिमांशु जोशी, मृदुला गर्ग, मधुकर सिंह, दूधनाथ सिंह आदि की पीढ़ी के लेखकर हैं, तीसरे छोर पर नमिता सिंह, अरूण प्रकाश, मैत्रेयी पुष्पा, उदयप्रकाश, धीरेन्द्र अस्थाना, शिवमूर्ति, संजय आदि लेखक हैं।

हिन्दी कहानी का आने वाला कल इसी दिशा की ओर संकेत करता है। यह भी कहना असंगत होगा कि सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिरता दिन पर दिन अधिकाधिक जटिल होती जा रही हैं, इसलिए आने वाले कल की हिन्दी कहानी अधिक जुझारू भूमिका निभाती हुई और अपने समय के सवालों से सघनता के साथ जूझती हुई नजर आएगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. भाषा विज्ञान-भोलानाथ तिवारी
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास-डॉ. नगेन्द्र
3. हिन्दी साहित्य की युग और प्रवृत्तियाँ-डॉ. शिव कुमार शर्मा
4. भाषा विज्ञान-हरदेव बाहरी